पूछत घर उनका, नाथे सों भयो मिलाप ।
मिलते ही सुख उपज्या, मिट गयो सब ताप ॥४५॥

ठट्ठे नगर में वे नाथा जोशी का घर पूछ ही रहे थे कि उन्हीं से मिलाप हो गया । नाथा जोशी ने जैसे ही श्री जी के दर्शन किए तो वह माया के दुःख भूल गए ।

बात लगे पूछने, कौन भाग हैं हम ।
उहाँ सेती इहाँ लों, धरे मुबारक कदम ॥४६॥

तब नाथा जोशी ने श्री जी की आदर सहित पधरावनी की और कहने लगा कि हमारे कौन से भाग्य जागृत हुए हैं कि आप गुजरात से चलकर हमारे यहां पधारे हैं और आपके मंगलमई चरणों के हमें दर्शन हुए हैं ।

महामति कहे ऐ साथ जी, दीप से ले ठट्ठा में ।
अब फेर कहों ठठे की, भई बीतक जो हमसे ॥४७॥

अब धाम के धनी श्री प्राणनाथ जी फुरमाते हैं कि दीपबन्दर से लेकर ठट्ठे नगर तक जगह जगह जिन सुन्दरसाथ की जागनी हुई उस बीतक को सुनाया है । अब स्वामी लालदास जी कहते हैं कि ठट्ठे नगर में मेरी कैसे जागनी हुई, उसे मैं बताता हूं ।

(प्रकरण २२, चौपाई ९९५)

अब कहों बीतक ठट्ठे की, याद करो मोमिन ।
जो दिखाया खेल तुम को, बीच जिमी नासूत सुभान ॥१॥

अब ठट्ठे की बीतक कहता हूं । हे साथ जी ! उसे सुनकर याद कीजिए कि इस मृत्युलोक में श्री राजजी महाराज ने माया का खेल हमें कैसे दिखाया है ।

श्री जी आये ठट्ठे में, रहे दिन दस-बार ।
फेर लाठी बन्दर आये, हुए इत हुसियार ॥२॥

श्री जी १०-१२ दिन ठट्ठे नगर में रहे फिर उन्होंने समुद्र के किनारे लाठी बन्दरगाह (करांची) से अरब चलने के लिए बड़ी चौकसी से तैयारी की ।

विस्वनाथ भट्ट मिले, आये देवे के दुकान ।
उन आदर बड़ो कियो, थी ऊपर की पहिचान ॥३॥

लाठी बन्दरगाह में अपने एक सुन्दरसाथ विश्वनाथ भट्ट मिले । वे स्वामी जी को लेकर देवे भाई की दुकान पर आ बैठे । उसे भले ऊपर की पहचान थी फिर भी उसने आदर सत्कार के साथ श्री जी को बिठाया ।

Nijanand App

इहां से चढ़े नाव में, सत्रह दिन लगा तूफान ।
ओ जहाज फेर आई, जो था हुकम सुभान ॥४॥

अब श्री जी यहां से अरब की यात्रा के लिये नाव में सवार हुए । १७ दिन तक तो वायु का वेग यात्रा के अनुसार चलता रहा । किन्तु १७ दिन के बाद वायु का रूख उल्टा हो गया । श्री राज जी के हुकम से कारज कारण ऐसा हुआ कि वायु के उल्टा चलने से जिस जहाज में श्री जी सवार थे, वह वापस लाटी बन्दर आ गया ।

फेर पधारे साथ वास्ते, अजूं मोमिनों सों न भयो मिलाप ।
तो नाव जाय न सकी, फेर के आये आप ॥५॥

जो सुन्दरसाथ टट्टे नगर में रहते थे उनकी श्री जी से मिलाप न होने के कारण जागनी नही हो सकी थी । उनके लौटने का कारण यही था ।

फेर लाटी से टटठे आये, नाथा जोसी मिला धाए ।
बन्धन सो मुलाकात भई, उन अपने घरों पधराए ॥६॥

जब श्री जी दुबारा लाटी बन्दर से टट्टा नगर आये तो नाथा जोशी शीघ्रता पूर्वक श्री जी का आगमन सुन कर स्वागत करने गये । आते समय एक सुन्दरसाथ जिनका नाम बन्धन भाई था उन्होंने श्री जी की पधरावनी अपने घर की ।

फेर जिन्दा दास मिले, सुनी चर्चा बाई ठाकुरी ।
ओ आई साथ में, मेहर राज की उतरी ॥७॥

फिर बन्धन भाई के घर से आते समय रास्ते में जिन्दादास और ठाकुरीबाई मिली । उन्होंने श्री राजजी की मेहर से श्री जी की पधरावनी अपने घरों की ।

तब होने लगी चरचा, बड़ो आनन्द भयो साथ ।
चरचा करें जोस में, जाके धनियें पकड़े हाथ ॥८॥

तब वहां से चलकर नाथा जोशी के घर पधारे तथा वहां वाणी चर्चा फिर प्रारम्भ हुई । श्री जी की जोश भरी चर्चा को सुन कर सुन्दरसाथ को अति आनन्द होता है । इस चर्चा को सुनने वही आते है जिन पर श्री राज जी महाराज की मेहर होती है ।

इन समें लोक आवत, चरचा सुनने को ।
सोर पड़ा सहर में, एक साध आया टट्टे मों ॥९॥

श्री जी के मुखारबिन्द से अखण्ड बृज तथा नित्य वृन्दावन तथा परमधाम की चर्चा की महिमा लोगों ने सुनी तो कहने लगे कि कोई महान साधु टट्टे नगर में आये है जो ऐसा अखण्ड ज्ञान सुनाते हैं ।

Nijanand App

जो कोई साध ए सुने, सो करने आवे दीदार ।
सुन चरचा राजी होवे, कहे सुकर परवरदिगार ॥१०॥

सब कोई कहते थे कि जो कोई श्री जी की चर्चा सुन लेता है, वह घर पर चैन से नही बैठ सकता है । वह अखण्ड वाणी की चर्चा सुनकर नित्य दर्शन के लिये आता है और चर्चा सुन कर परमात्मा की कृपा का लाख लाख शुक्र बजाता है कि हमें ऐसा ज्ञान सुनने को मिला है ।

सुने साध चिन्तामन, रहे कबीर के धरम ।
कह्या कीजे दीदार तिनका, देखें चरचा उनके करम ॥११॥

श्री जी ने सुना कि कबीर पंथ के आचार्य श्री चिन्तामणि है जो बुध निष्कंलक अवतार के आने की साखियां अपने शिष्यों में कहते रहते है । तब श्री जी ने कहा कि मुझे उनके पास ले चलो । चल कर देखें कि वह कैसी चर्चा करते है ?

घरों गये उनके, तिनसों करी मुलाकात ।
देखत ही पाया सुख, वह करने लगा बात ॥१२॥

स्वामी जी कुछ सुन्दरसाथ के साथ चिन्तामणि के घर गये तथा उनसे मुलाकात की । श्री जी को देख कर चिन्तामणि को बहुत सुख हुआ तथा वह बातें करने लगे ।

कहां से आये तुम, चरचा करो हमसों ।
के तुम हमको सुनाओ, जो कछु ज्यादा आवे तुमको ॥१३॥

उन्होंने श्री जी से पूछा कि हे महाराज ! आप कहां से पधारे है ? तब श्री जी ने कहा कि मैं तो एक परदेशी हूं । आप की चर्चा की महिमा सुन कर आया हूं । तब चिन्तामणि ने कहा कि मुझे तो कबीर जी का ज्ञान आता है उसे मैं सुना सकता हूं । यदि उससे आगे का ज्ञान आपको आता है तो उसे सुनाने की कृपा करे ।

जो देने आये हों तो देओ, लेने आये हो तो देवें हम ।
तुम सुनो हम कहें, ज्यों होए चरचा आतम ॥१४॥

यदि आप मुझे ज्ञान देने के लिये आये हैं तो मैं लेने को तैयार हूं । आप सुनाइये । और यदि लेने के लिये आये हैं तो मैं सुनाता हूं । उसे सुनिये । श्री जी ने कहा कि मैं सुनने के लिये ही आया हूं । तब चिन्तामणि ने कहा कि अच्छा । मैं सुनाता हूं आप सुनिए । श्री जी ने कहा कि आप आत्म कल्याण के विषय पर ही सुनाइए ।

Nijanand App

कहो तो चतुर्भुज का, दिखाऊं तुम्हें दरसन ।
के कहो-ज्योति स्वरूप को, के सेससांई सहस्त्र फन ॥१५॥

तब चिन्तामणि बोले कि यदि आप कहें तो मैं आपको चतुर्भुज स्वरूप विष्णु भगवान के दर्शन कराऊं या ज्योति स्वरूप, आदि नारायण के दर्शन कराऊं या कहें तो सहस्त्र फन वाले शेषशायी नारायण के दर्शन कराऊं ।

के झिलमिल अनहद, ए सब दिखावें हम ।
ना तो तुम हमको दिखाओ, जो कछु पाया होवे तुम ॥१६॥

झिलमिल ज्योति तथा अनहद नाद (शब्द) जो सातों शून्यों से निकल रहे हैं उसका ज्ञान मैं दे सकता हूं । इससे अधिक जो कुछ आपके पास है तो कृपा करके आप उसे दिखाइये ।

तब श्री जीयें कह्या, हम लेने आये वस्त ।
हमको तुम बताये देओ, ए है हमारा कस्त ॥१७॥

तब श्री जी ने कहा कि हे महाराज ! हम तो वस्तु लेने के लिए ही आए हैं । आप हमारे लिए कष्ट करके इनके बारे में सारे भेद खोलकर बताइए ।

जो कछु तुम कह्या, सो ग्रहें तुम्हारे वचन ।
तिनका निरणय कर देओ, दिल करो रोसन ॥१८॥

आपने जो कुछ कहा है, हमने अच्छी तरह सुना है । अब आप ही निर्णय करके बता दीजिए कि इनमें से कौन हमारी आत्मा का कल्याण कर सकता है ? यह बताकर हमारे संशय मिटाइये ।

एक कमाल की साखी पर, चरचा हुई जोर ।
जोस में श्री जी ए कह्या, तब पाया चित मरोर ॥१९॥

तब चिन्तामणि ने देखा कि ये कोई बहुत ऊंचा ज्ञान सुनना चाहते हैं इसलिए अपने ज्ञान के अहंकार से कबीर पंथ के आचार्य होकर भी कबीर जी की पहचान को न जानने से उनके पुत्र कमाल को श्रेष्ठ समझकर कबीर जी की एक चर्चा सुनाने लगे । उस साखी को सुनकर श्री जी को जोश आया और चिन्तामणि के चित्त को फिरा दिया । चिन्तामणि जी ने कमाल के प्रति यह साखी सुनाई थी ।

Nijanand App

साखी : कहया कोड़ी ते हीरा भया, हीरा ते भया लाल ।
आधा भक्त कबीर है, पूरा भक्त कमाल ॥

तब श्रीजीए कहया, तुम क्या जानो कबीर ।
तुम जो आधा भक्त इनको कहया, जो चित नाहीं तुम धीर ॥२०॥

तब श्री जी ने चिन्तामणि जी से जोश में आकर कहा कि कबीर जी ने कितना ऊंचा ज्ञान कहा है। आप अज्ञानता के कारण उनको आधा भक्त कह रहे हैं तथा उनका लड़का जो माया का जीव था, उसे पूरा भक्त कह रहे हैं । इससे लगता है कि आपके मन में स्थिरता नही है । आओ हम तुम्हें कबीर और कमाल के अन्तर की पहचान कराते है -

कमाल कबीर के बेटे थे और उनकी मित्रता राजकुमार के साथ थी । ये दोनों मिलकर एक विद्यालय में पढ़ते थे । राजकुमार जब बड़ा हो गया तब अपने पिता से कहकर शिकार सीखने के लिए वैसी वेशभूषा पहन कर वजीरों को साथ लेकर वन में जाने लगा तो कमाल को भी साथ लेने के लिए उनके घर गया। उस दिन कमाल के फटे कपड़े पहने देखकर राजकुमार को ज्ञान हो गया कि यह गरीब है तब वजीर से अपने कपड़े मंगवाकर तथा उसे पहनाकर शिकार खेलने के लिए साथ में ले गया । नगर से बाहर वे निकले ही थे कि सामने से ऊंटों और घोड़ों पर लदा हुआ खजाना राजा के राज खजाने में जा रहा था । राजकुमार ने तुरन्त उनके प्रमुख को बुलाकर कुल राशि की पहुंच देकर हुकम किया कि आज ये सारा धन कमाल के घर डाल दो । उन्होंने राजकुमार की आज्ञानुसार ऐसा ही किया ।

वन से लौटने के बाद कमाल जब अपने घर आया तो उसकी माता की प्रसन्नता की कोई सीमा नही थी । कमाल और उनकी मां शेख चिल्लियों की तरह धन को खर्च करने का प्लान बनाने लगे । इतने में कबीर जी आ गए । कबीर जी प्रातः से रात्रि तक कपड़े की बुनकरी (जुलाहे का काम) करते थे । इतना परिश्रम करने के बाद केवल दो पैसे बचते थे । उस समय भी जब तक चार साधुओं को भोजन नही करा लेते थे तब तक भोजन नही करते थे इसलिए उनके घर में गरीबी थी । वे सदा क्षर से परे अक्षर की भक्ति में लीन रहते थे । उस दिन रात्रि को जब घर आए तो घर में धन के ढेर को देखकर बाहर ही खड़े रह गए तब अपनी पत्नी तथा पुत्र से स्पष्ट कह दिया कि जहां माया है, वहां कबीर नही और जहां कबीर है, वहां माया नहीं अर्थात् कबीर जी के मन में झूठी माया की चाहना ही नही थी लेकिन कमाल उस धन को पाकर फूले नही समा रहा था क्योंकि वह माया का जीव था तब कबीर जी ने कहा कि यदि मुझे चाहते हो तो इस धन को उठाकर बाहर फेंक दो । तब कबीर जी के कहने पर कमाल राजकुमार का दिया हुआ सारा धन बाहर फेंकने लगा । इतने में प्रातः काल सारे लोग उठ कर देखने लगे कि कमाल कबीर जी के घर से धन उठा-उठा कर बाहर फेंक रहा है तो दुनियां वालों ने अपनी बुद्धि से कहा कि कबीर आधे भक्त हैं जो धन को अपने घर में दबा रखे थे तथा दुनियां को गरीब बताते रहे है । दरअसल पूरे भक्त कमाल है जो धन को बाहर फेंक रहे हैं ।

मुझे इस बात का दुःख हुआ है कि तुम कबीर जी के पन्थ के आचार्य होकर कबीर जी जैसे सन्त को आधा भक्त कहते हो तथा माया में डूबे एक जीव को पूरा भक्त कहते हो । आओ मैं कबीर जी की साखी से ही उनकी पहचान कराता हूं ।

Nijanand App

कहां मजल कबीर की, केती अकल कमाल ।
तौल देखो दोनों को, किनका कैसा हाल ॥२१॥

इस हकीकत से कबीर जी की मंजिल और कमाल की अक्ल को तोलो कि कौन आधा भक्त है तथा कौन पूरा भक्त है ।

बिन पहिचाने बोलत, नाहीं तुम सराफ ।
कहां कबीर कहां कमाल, विचार देखो आप ॥२२॥

बिना पहचान के तुमने इस साखी का अर्थ किया है । मालूम होता है कि तुम परमात्मा के भक्त और माया के जीव को पहचानने के पारखी नही हो । अपने मन में विचार करके देखो कि कमाल कहां है तथा कबीर कहां है ?

एक कबीर का कीर्तन, सुनाये दिया तब ।
तब चिन्तामने ने कह्या, देखो सब्द निकस्या अब ॥२३॥

तब श्री जी ने कबीर की पहचान कराने के लिये कबीर के बीजक में से एक कीर्तन सुनाया जिसको सुनते ही चिन्तामणि ने अपने शिष्यों को कहा कि देखो ! यह ज्ञान पारब्रह्म के स्वरूप की पहचान करा रहा है जिसके लिये कबीर जी ने कहा था कि इसका अर्थ बुद्ध निष्कलंक अवतार के बिना कोई भी नही खोल सकता है । देखो ! वही पारब्रह्म आ गये है ।

साखी : एक पलक ते गंग जो निकसी, हो गयी चहुं दिस पानी ।
उहि पानी दो परवत ढांपे, दरिया लहर समानी ॥

उड़ मक्खी तरवर चढ़ बैठी, बोलत अमृत बानी ।
वह मखी के मखा नाहीं, बिन पानी गरभानी ॥

तिन गरभें गुन तीनों जाये, वह तो पुरूष अकेला ।
कहे कबीर या पद को बूझे, सो सतगुरू मैं चेला ॥

तब श्री जी ने इसका अर्थ समझाया कि पूर्णब्रह्म परमात्मा के उस धाम में श्यामा जी और सखियों ने अक्षर ब्रह्म का खेल देखने की तथा अक्षर ब्रह्म को रंगमहल की लीला देखने की इच्छा हो गयी । दोनों की इच्छा पूरी करने के लिये अक्षरातीत पारब्रह्म ने दोनों के ऊपर फरामोशी का पर्दा डाला । जिस फरामोशी से उस पारब्रह्म के सत अंग तथा आनंद अंग (जिनको दो पहाड़ कहा है)पर फरामोशी छा गयी । फरामोशी के कारण सबकी सुरता इस मिथ्या संसार में उतर आई । इस बात की पहचान के लिये उस पारब्रह्म की हुक्म रूपी मक्खी ने संसार रूपी वृक्ष के ऊपर आ कर संसार के सभी धर्मग्रन्थों में उसकी पहचान के प्रमाण लिखे है । हुकम के स्वरूप उस मक्खी का कोई मक्खा नही है । उसके हुकम की शक्ति से ही संसार बना है । उसके हुक्म से ही तीनों गुणों की उत्पति हुई है । वह पारब्रह्म तो केवल एक ही है जिसके बारे में कबीर जी ने कहा है कि जो इस साखी का अर्थ बतायेगा वह पारब्रह्म के स्वरूप होंगे तथा मैं उनका शिष्य हूं ।

Nijanand App

देखो सब्द आगे चला, सो सख्स मिल्या आए ।
अब देखो सब्द इनके, ए सब्द पार पहुंचाए ॥२४॥

तब कबीर जी के इतने ऊंचें ज्ञान को श्री जी के मुख से सुन कर चिन्तामणि ने अपने शिष्यों से कहा कि इनके शब्दों को ध्यान से सुनो । ये शब्द ही भवसागर से परे परमधाम पहुंचाने वाले है ।

मैं तुमसे कहता था, जो सब्द आगे चलत ।
अपने सेवकों से कही, वह सख्स पहुंचा इत ॥२५॥

चिन्तामणि ने अपने शिष्यों से कहा कि पारब्रह्म के दुनियां में आने का समय हो गया है और ये मैं सदा ही तुम्हें सुनाता ही रहता था कि पारब्रह्म स्वयं आकर अपनी पहचान करायेंगे जो ऊपर की कही साखी से सिद्ध हो रहा है कि ये वही पारब्रह्म स्वयं है ।

एती मुलाकात करके, उठे श्री जी साहिब ।
आए अपने आसन, करी साथ से चर्चा तब ॥२६॥

चिन्तामणि के ऐसे शब्दों को सुनकर स्वामी जी वहां से उठकर नाथा जोशी के घर आ गए तथा चिन्तामणि का सारा वृत्तान्त सुन्दरसाथ को कह सुनाया ।

कलू मिश्र के घरों, कथा में गए एक दिन ।
असनाई उहां कच्ची, उत चर्चा सुनी सैंयन ॥२७॥

सुन्दरसाथ के कहने पर एक कल्लू मिश्र भी जो कथा सुनाने वाले थे । उसकी कथा सुनने के लिए श्री जी गए । उसकी चर्चा में केवल शारीरिक व्यायाम इत्यादि की बातें थीं । आत्म तत्व का कोई भी ज्ञान नही था ।

महामति कहें ऐ साथ जी, ए ठट्ठे का मजकूर ।
सम्बत सत्रह सै चौबीसें, कहूं आगे और जहूर ॥२८॥

आप धाम के धनी स्वामी श्री प्राणनाथ सम्वत् १७२४ में ठट्ठे नगर में थे तो उस समय का चिन्तामणि जी का वृत्तान्त है जो और कुछ आगे हुई, अब सुनाता हूं ।

(*प्र० २३, चौ० १०२३*)

चिन्तामनि ढूंढत फिरे, कहां है उन साध का ठौर ।
आया पूछत कथा में, मोहे ढूंढत भई भोर ॥१॥

श्री जी के उठ कर वापस आने के पश्चात् चिन्तामणि को ऐसी चोट लगी कि वह शहर में ढूढंते रहे कि स्वामी जी कहां हैं ? रात भर ढूंढते रहने के पश्चात् प्रातः कल्लू मिश्र जी के घर कथा में गए । वहां से खबर मिली कि वे नाथा जोशी के घर पर हैं ।

Nijanand App

तब मिसरें बताइया, नाथे जोसी का घर ।
तहां से खबर लैय के, आय पहुंचे अटारी पर ॥२॥

कल्लू मिश्र जी के बताने पर चिन्तामणि नाथा जोशी के घर आए । आप स्वामी जी अटारी पर बैठे थे ।

तहां साथ सब बैठें थे, बीच में बैठे श्री राज ।
चरचा के बखत मों लगा, चिन्तामन कदमों इन काज ॥३॥

वहां श्री जी के चरणों में सुन्दरसाथ भी चर्चा सुनने के लिए बैठे थे कि इतने में चर्चा के समय में ही चिन्तामणि ने चरणों में प्रणाम किया ।

साथ संगी सब अपनें, चरचा लगे सुनने ।
श्रवना दई भली भांत सों, निसबत अंकूर अपने ॥४॥

अपने सब शिष्यों के साथ भली भांति मग्न होकर चर्चा सुनी । परमधाम की निसबत होने के कारण से चर्चा सुनते ही आतम जाग्रत हो उठी ।

सुख पाया चरचा मिने, अपनी मूली गई भूल ।
चरचा देखी अधिक, असल अंकूर का मूल ॥५॥

श्री जी का अलौकिक ज्ञान सुनते ही वह अपनी गादी तथा ज्ञान को भूल गया । श्री जी की चर्चा का ज्ञान अक्षर से भी आगे अक्षरातीत का था इसलिए परमधाम की आतम होने के कारण वह तुरन्त समझ गया ।

इनके जो सेवक थे, खल भल पड़ी तिन में ।
फिरे चित जो तिनके, इन चरचा सुनने से ॥६॥

चिन्तामणि जी के शिष्यों ने भी चर्चा सुनी थी । उनके भी दिल डांवांडोल हो गए और कबीर पंथ से ईमान हटाकर श्री जी के चरणों में ईमान ले आए ।

Nijanand App

दिन दोए तीन लग, चरचा सुनी बनाए ।
तब सब लगे कदमों, हुई पहिचान हक जाए ॥७॥

दो-तीन दिन जब अच्छी तरह से क्षर अक्षर अक्षरातीत के भेद की चर्चा उन्होंने सुनी तो चिन्तामणि अपने सब शिष्यों सहित श्री जी के चरणों में ईमान ले आए क्योंकि चर्चा से उन्हें पूर्ण ब्रह्म अक्षरातीत और परमधाम की पहचान हो गई ।

खण्डनी भली भांत सों, देखत साथ सबन ।
तब चिन्तामन छाने कहूया, सरम राखियो बीच मोमिन ॥८॥

चर्चा के अन्दर सब सुन्दरसाथ में श्री जी ने अज्ञानी आचार्यों तथा गादी पतियों के प्रति खण्डनी करते हुए कहा कि मान सम्मान के भूखे ऐसे लोग जो अपने ही धर्म के सिद्धान्तों, मूल ग्रन्थों तथा प्रवर्तकों के विषय में न जानते हुए भी गादी पर शिष्यों को लूटने के लिये बैठ जाते हैं । ऐसे ही लोगों ने धर्म के मूल सिद्धान्तों को मिटा रखा है । तब चर्चा के बाद चिन्तामणि ने एकान्त में विनती की कि हे स्वामी जी ! आपको तो यहां से चला ही जाना है लेकिन शिष्यों में मेरे मान को बचा लेना ।

एकान्त मोसों कहो, जानो तैसी खण्डनी ।
पर मेरे सेवकों में सरम, राखो जान अपनी ॥९॥

एकान्त में बिठा कर जिस प्रकार भी खण्डनी करना चाहो, खूब कर लीजिए । लेकिन मैं आपकी शरण में आ गया हूं । मेरे शिष्यों में मेरा मान बचा लेना ।

तब राजें इनसों कहूया, तुम्हारी क्यों न राखें सरम ।
तुमको जो हम कहेंगे, दे परदा ओट मरम ॥१०॥

तब श्री जी ने कहा कि हे चिन्तामणि ! आप किसी भी प्रकार की चिन्ता मत कीजिए । मैं आपकी आतम को निर्मल करने के लिये जो भी आतम तत्व का रहस्यमयी ज्ञान कहूंगा वह इस प्रकार से कहूंगा जिस प्रकार एक कुम्हार मिट्टी के कच्चे घड़े को सुन्दर ढंग से बनाने के लिये अपना एक हाथ घड़े के अन्दर रख कर घड़े का सुन्दर रूप बनाने के लिये दूसरे हाथ से मारता है तथा अन्दर वाले हाथ से ओट देता है कि यह टूट ना जाए । उसी तरह से आपकी आतम को निर्मल करने के लिये खण्डनी इस तरह से करूंगा कि आम जनता समझ नही पायेगी ।

Nijanand App

ए सब गये अपने घरों, राजें रात में कियें कीर्तन ।
सुनो रे सत के बनजारे, ए सुकन ग्रहो मोमिन ॥११॥

जब चिन्तामणि अपने शिष्यों के साथ घर चले गये तो उनकी आतम को जगाने के लिये श्री राज जी के आवेश द्वारा (सुनो रे सत के बनजारे) यह किरंतन उतरा । हे सुन्दरसाथ जी ! आप भी इस किरंतन से सिखापन लीजिए । किरंतन में कहा है कि हे सत के व्यापारी गुरूजनों । मैं एक बात समझा कर कहता हूं । उसे सुनिए । यह सारा संसार माया के फंद में जकड़ा हुआ है । सबने अपने ही हाथ से अपने गले में माया की फांसी उल्टी लगा रखी है । चौदह लोक तक यही हालत है । यहां की मान मर्यादा को छोड़ने पर ही कुछ ज्ञान की प्राप्ति होती है । ज्ञानी लोगों को मैंने देखा है कि वे भले ही गादी तो नही चाहते परन्तु उन्हें अपना मान अभिमान नही छूटता भले कोई यहां लाखों शिष्य बना ले तथा समाज में अपनी महिमा करा ले और अपने शिष्यों में परमात्मा जैसी पूजा होने लगे । उनके सतगुरू होकर भी कोई बैठे तो भी उसको पारब्रह्म की पहचान नही हो सकती । यदि उस पारब्रह्म को पाना चाहते हो तो मान गुमान को छोड़ो । यह ऐसी खाई है कि जो इसमें गिर जाता है उसका जीवन नष्ट हो जाता है । जिस प्रकार गादी की चाहना छोड़ दी है उसी प्रकार मान सम्मान और चतुराई को भी छोड़ दो । पारब्रह्म को पाने का ज्ञान संसार के कर्मकाण्ड वाले पन्थों में नही है । ऐसा सतगुरू जो उस पूर्णब्रह्म की पहचान करा कर उसकी प्राप्ति का रास्ता देता है वह सारे कलियुग में कहीं कोई एक ही होता है । माया से लेकर परमधाम तक की पहचान केवल उसकी वाणी चर्चा से ही हो सकती है तथा उसको ही होती है जिसमें परमधाम की आतम होती है । यदि ऐसे सतगुरू मिल जाये तो अपने जीव का कल्याण करने के लिये एक पल की भी देर नही करनी चाहिए । परन्तु मान के चाहने वाले को मान गुमान को त्यागे बिना उस पारब्रह्म सच्चिदानन्द की महान साहिबी की कोई भी पहिचान नहीं हो सकती । मन को समर्पित किये बिना और कोई रास्ता भी नही है । अपने ही ज्ञान के अहंकार में नही पड़ना चाहिए । वह पारब्रह्म स्वरूप सतगुरू श्री प्राणनाथ जी कहते हैं कि मूल अंकूर से ही उनके चरण मिलते हैं तथा उनके मिलने पर झूठ को छोड़कर उनके चरणों में समर्पित हो जाना चाहिए ।

तिनमें सुकन खण्डनी के, तुम छोड़ो ग्यान गुमान ।
प्रात को आये जब पढ़िया, तब चिंतामन को भई पहिचान ॥१२॥

इस किरंतन में चिन्तामणि की आतम को जगाने के लिए खण्डनी के ऐसे वचन मान गुमान को छोड़ने के कहे गए हैं । प्रातः को जब चिन्तामणि ने इस चर्चा को सुना तो उस की आतम जागृत हो गई ।

अब मारों काले कुत्ते को, लाठी सिर ऊपर ।
सेवकों आगे तब कहया, मैं खाली कछु न खबर ॥१३॥

चर्चा को सुनते समय चर्चा में ही खड़े होकर चिन्तामणि श्री जी से अर्जी करने लगे कि हे धाम धनी! आपकी ज्ञानमयी लाठी से अपने अहंकार रूपी काले कुत्ते को मारता हूं । उन्होंने अपने सेवकों के सामने ही कह दिया कि मैं केवल नाम का ही आचार्य हूं । मेरे पास कुछ भी नही है ।

Nijanand App

तब श्रीजीयें सराहिया, स्यावास चिन्तामन ।
पाई ते निसबत, ए सुकन मोमिन ॥१४॥

भरी सभा में एक गुरू के वास्ते ऐसे अपमान भरे शब्द अपने लिए ही कहना बहुत कठिन होते हैं किन्तु चिन्तामणि की सच्चाई के लिए श्री जी ने उसे शाबाशी दी और यह कहा कि बेशक तुमने अपनी आतम से अपने धाम धनी को पहचाना है । यही मोमिनों की निसबत है ।

कह्या श्री तारतम इनको, सब सेवकों समेत ।
परहेज कराया चार बात का, ए कबूल कर दिल लेत ॥१५॥

श्री राजजी महाराज और परमधाम की पहचान हो जाने के बाद श्री जी ने चिन्तामणि को उनके शिष्यों के साथ चार वस्तुओं का परहेज कराकर श्री राजजी के चरणों के साथ सम्बन्ध जोड़ा ।

एक हराम कह्या मांस को, दूसरा हराम सराब ।
तीसरी औरत बिरानी तजे, सो पावे हैयाती आब ॥१६॥

वे चार वस्तुएं इस प्रकार हैं- श्री निजानन्द सम्प्रदाय को धारण करने के लिए मांस खाना, शराब पीना, पराई स्त्री से अनुचित सम्बन्ध जोड़ना महापाप है । जो इन वस्तुओं का त्याग करता है, उसी की आत्मा जाग्रत होकर पारब्रह्म अक्षरातीत का सुख लेती है ।

चोरी झूठ बोलना, इनका छोड़ाया उदक ।
अब हम कबहूं ना करें, हम पाया बेसक हक ॥१७॥

चोरी करना और झूठ बोलना छोड़ने का भी प्रण करवाया तब सबने प्रतिज्ञा की कि हम मर जाएंगे लेकिन हम कभी भी इसका प्रयोग नही करेंगे ।

इन समय में चरचा, बड़ी जो होवे तित ।
साथ की आमदानी, हुई बड़ी इन बखत ॥१८॥

इस प्रकार चिन्तामणि तथा उनके हजारों शिष्य तारतम लेकर श्री निजानन्द सम्प्रदाय में आ गए । स्वामी जी की जोश भरी चर्चा का अखण्ड एवं अलौकिक ज्ञान सुनकर शहर के और भी लोगों ने चर्चा सुनी और सुन्दरसाथ में शामिल हुए ।

चतुरा एक पोहोकरना, आवे श्री राज की सेवा में ।
ल्यावे दूध नित्यानें, सुनी चरचा कानों उने ॥१९॥

चतुरा पोहोकरना एक सुन्दरसाथ श्री जी के मुखारबिन्द से चर्चा सुनने आता था तथा सेवा के लिए हर रोज दूध ले आता था ।

Nijanand App

तहां ब्रज रास को बरनन, होत हतो नित्यान ।
वह देख अचंभा होवहीं, चरचा सुनते कान ॥२०॥

श्री जी अपनी चर्चा के अंदर इस कालमाया के ब्रह्मांड से आगे योगमाया के ब्रह्मांड में अखंड ब्रज और रास है इसकी चर्चा हर रोज सुनाते थे । उस अखंड चर्चा को सुनकर उसको बहुत हैरानी होती थी।

तहां उनकी सोहोबत लाल सों, नित्याने बखार में होए ।
तहां आये चतुरे कही, चरचा सुनके आया जोए ॥२१॥

चतुरा पोहोकरना श्री जी की चर्चा सुनने के बाद श्री लाल दास जी जो स्वयं श्री मद्भागवत के बड़े विद्धान थे पहले से ही भागवत गीता की चर्चा हर रोज सुनाया ही करते थे और चतुरा पोहोकरना रोज चर्चा सुनने आया करता था । परन्तु श्री जी के मुख से सुनी हुई ब्रज रास की लीला जो अक्षरातीत श्री राजजी महाराज ने अक्षर की इच्छा पूरी करने के लिए योगमाया के सबलिक ब्रह्म में अखण्ड की थी । जिसका वर्णन श्री मद्भागवत में नही आता है क्योंकि उस समय काल माया का ब्रह्माण्ड प्रलय हो चुका था । इस तीसरे कालमाया के ब्रह्माण्ड में जो इस गोकुल मथुरा वृन्दावन में प्रतिबिम्ब की लीला हुई है इसका वर्णन किया गया है । इसलिए आज ये सारे भेद सुनकर चतुरा पोहोकरना भी श्री लालदास जी से प्रश्न करता है ।

कहां ब्रज अखंड क्योंकर, कहां रास अखंड ।
ए तो तुम कहत हो, न्यारा जो ब्रह्मांड ॥२२॥

हे लालदास जी ! आप जो भागवत के द्वारा ब्रज और रास को अखंड कहते है वह कहां है और उस ब्रज रास को किसने अखंड किया है ।

तब लालें कह्या, रास ब्रज न हमारी दृष्ट ।
चरम आंख क्यों देखिए, इन हाल सब सृष्ट ॥२३॥

तब श्री लाल दास जी ने कहा कि उस योगमाया के नित्य वृन्दावन तथा अखंड ब्रज को यह सपने की बुद्धि वाला संसार उस ब्रह्मांड के बारे में एक शब्द भी नही कह सकता है । वह तो दिव्य दृष्टि अर्थात जागृत बुद्धि से ही जाना जा सकता है ।

तब चतुरे ने कही, क्यों आवे तुम्हारी नजर ।
तुम दिव्य दृष्ट कब पाओगे, क्यों कर होय फजर ॥२४॥

तब चतुरे ने कहा कि उस अखंड ब्रज और रास को जाने बिना भवसागर से पार कैसे जाओगे ? दिव्य दृष्टि (जागृत बुद्धि) तुम कब और कहां से पाओगे और कैसे उस ज्ञान को समझे बिना तुम अखंड होओगे।

Nijanand App

पांच तत्व तीन गुन को, जब हुयो ब्रह्मांड को नास ।
तब ब्रज और रास की, ठौर कहां रही खास ॥२५॥

क्योंकि भागवत के अनुसार तीन गुण पांच तत्व वाला चौदह लोकों का यह ब्रह्मांड महाप्रलय में नाश हो जायेगा तो इस ब्रह्मांड वाला मथुरा और वृन्दावन कहां रहेगा और आप भी कहां पहुँचोगे ।

तब लालदास चौंकिया, तें कहां सुनी ए बात ।
मोहे ठौर बताय देओ, ए कहां पाई सिफत जात ॥२६॥

ऐसे अखंड ज्ञान को सुन कर श्री लालदास जी हैरान रह गए और चतुरा से बोले कि नित्य वृन्दावन और अखंड ब्रज का ज्ञान तुमने कहां से प्राप्त किया है । मुझे भी यह ठिकाना बताओ कि कहां और किस महापुरूष के द्वारा तुमने इस अखण्ड ज्ञान को प्राप्त किया है?

तब चतुरे ने कह्या, कोई साध आए इन ठौर ।
तहां चरचा होत है, ब्रज रास की जोर ॥२७॥

तब चतुरे ने कहा कि ठट्ठे नगर में नाथा जोशी के घर कोई महान पुरूष पधारे हैं । वह हर रोज अपनी चर्चा में विशेषकर अखण्ड योगमाया के ब्रह्माण्ड में बृज तथा रास का वर्णन सुना कर उससे भी परे अक्षर-अक्षरातीत तथा अखण्ड परमधाम की चर्चा सुनाते हैं ।

महामति कहें ए साथ जी, ए ठट्ठे की बीतक ।
ए मेहर सैयों पर करी, साहिब सुभानल हक ॥२८॥

अब धाम के धनी श्री प्राणनाथ जी कहते है कि हे सुन्दरसाथ जी । इस प्रकार श्री राज जी महाराज ने मेहर करके चतुरा पोहोकरना के द्वारा श्री लालदास जी को माया से निकाल कर अपने चरणों में लिया।

(प्रकरण २४, चौपाई १०५१)

श्री लालदास जी का श्री जी से मिलाप

ए ठट्ठे की बीतक, लालदास की मुलाकात ।
जिन भांत आए मिले, सो ए कहों फेर बात ॥१॥

अब आप धाम के धनी श्री प्राणनाथ जी कहते हैं कि सुन्दर साथ जी ! श्री लालदास जी किस प्रकार श्री जी के चरणों में आये, अब उस बात को कहता हूं ।

Nijanand App